शब्द

- विभिन्न ध्वनियों या वर्णों के मेल या संयोग से शब्द बनता है।
- प्रत्येक स्वतंत्र, सार्थक एवं व्यवस्थित वर्ण-समूह 'शब्द' कहलाता है।
- शब्द स्वतंत्र रहकर ही अपना अर्थ प्रकट करते हैं।

उदाहरण–लड़की, पुस्तक, मन, उत्तर इत्यादि।

यहाँ 'उत्तर' एक शब्द है, जिसमें 'उ', 'त्', 'त्', 'अ', 'र्' और 'अ'–ये 6 ध्वनियाँ हैं। इस शब्द के दो अर्थ हु 'उत्तर दिशा'। इसी तरह, सभी शब्दों के कोई-न-कोई एक या अधिक अर्थ होते हैं।

- हिंदी भाषा में शब्दों को तीन आधारों पर बाँटा गया है–

1. उत्पत्ति के आधार पर–शब्द के चार भेद हैं–
   (*i*) तत्सम (*ii*) तद्भव (*iii*) देशज (*iv*) विदेशी
2. बनावट के आधार पर–शब्द के तीन भेद हैं–
   (*i*) रूढ़ (*ii*) यौगिक (*iii*) योगरूढ़
3. प्रयोग और परिवर्तन की दृष्टि से–शब्द के मुख्यतः दो भेद हैं–
   (*i*) विकारी शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द)
   (*ii*) अविकारी शब्द अपना अव्यय (क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक और निपात

पद

- जब कोई शब्द स्वतंत्र न रहकर व्याकरण के नियमों में बँध जाता है, तब वह शब्द 'पद' बन जाता है।
- कारक, वचन, लिंग, पुरुष इत्यादि में बँधकर शब्द 'पद' बन जाता है।
- इस प्रकार वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही 'पद' कहलाता है।

जैसे–'उत्तर' शब्द का वाक्यों में प्रयोग करने पर–

तुम्हारा उत्तर सही नहीं था। (जवाब के अर्थ में)

हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है। (दिशा के अर्थ में)

इस तरह, शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तब वे किसी खास अर्थ की बात कर 'पद' का रूप ग्रहण कर लेते उत्तर 'शब्द' न रहकर 'पद' बन गया है।

इसी तरह– (*i*) लड़का पढ़ता है। (*ii*) बच्चा रोता है। (*iii*) हाथी चिंघाड़ता है। (*iv*) घोड़ा

उपर्युक्त चारों शब्द लड़का, बच्चा, हाथी, घोड़ा स्वतंत्र न रहकर वाक्यों में प्रयुक्त हो चुके हैं अर्थात व्याकरणि चुके हैं, अतः ये सभी 'पद' हैं।

पद के आठ भेद होते हैं–

(*i*) संज्ञा पद (*ii*) सर्वनाम पद (*iii*) क्रिया पद (*iv*) विशे
(*v*) क्रिया-विशेषण पद (*vi*) संबंधबोधक पद (*vii*) समुच्चयबोधक पद (*viii*) विस

अनुस्वार

स्वरों के उच्चारण में यदि हवा केवल नासिका से निकले, तो उसे अनुस्वार कहते हैं। इसका चिह्न (ं) है तथा यह चिह्न वर्णों के ऊपर एक बिंदु के रूप में प्रयोग किया जाता है।

अनुस्वार (ं) के प्रयोग में ध्यान देने योग्य बातें–

हिंदी भाषा में अनुस्वार (ं) के प्रयोग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रयोग विभिन्न रूपों में होता है, अतः इसका प्रयोग करते समय विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

- 'अं' अनुस्वार के रूप में बिंदु का (ं) प्रयोग किया जाता है। 'क' वर्ग से लेकर 'प' वर्ग तक के पंचम वर्णों के स्थान पर इसका प्रयोग किया जाता है। हिंदी की मानक वर्तनी में इसके प्रयोग को विस्तार दिया गया है। अब भिन्न-भिन्न नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर बिंदु का प्रयोग किया जाता है, जैसे–
  - गङ्गा → गंगा ['क' वर्ग (कंठ्य व्यंजन) के पंचम वर्ण 'ङ' का अनुस्वार में परिवर्तन]
  - मञ्जूषा → मंजूषा ['च' वर्ग (तालव्य व्यंजन) के पंचम वर्ण 'ञ' का अनुस्वार में परिवर्तन]
  - कण्ठ → कंठ ['ट' वर्ग (मूर्धन्य व्यंजन) के पंचम वर्ण 'ण' का अनुस्वार में परिवर्तन]
  - चन्द्र → चंद्र ['त' वर्ग (दंत्य व्यंजन) के पंचम वर्ण 'न' का अनुस्वार में परिवर्तन]
  - रम्भा → रंभा ['प' वर्ग (ओष्ठ्य व्यंजन) के पंचम वर्ण 'म' का अनुस्वार में परिवर्तन]
- अनुस्वार के पश्चात् य, र, ल, व तथा ह आने वाले शब्दों में अनुस्वार अपने मूलरूप में ही रहता है, अर्थात ऐसी जगह अनुस्वार चिह्न (ं) का प्रयोग नहीं होता, जैसे– मान्यवर, अम्ल, तुम्हारा इत्यादि।
- इसके अतिरिक्त द्वित्व वर्णों के आने पर वहाँ अनुस्वार चिह्न (ं) का प्रयोग नहीं किया जाता, जैसे– सन्नाटा, सम्मान, उन्नति इत्यादि।

हल सहित प्रश्न

अनुनासिक

'अनुनासिक' स्वरों के उच्चारण में वायु मुँह तथा नासिका दोनों से निकलती है। इसका चिह्न (ँ) है, जिसे चंद्रबिंदु भी कहते हैं।

अनुनासिक स्वरों के प्रयोग में ध्यान देने योग्य बातें–

- हिंदी में अनुनासिकता को प्रकट करने के लिए चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग किया जाता है, परंतु शिरोरेखा पर स्वरों की मात्रा लगी होने पर चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु का प्रयोग किया जाता है, जैसे–
  - गेंद → (गेँद)
  - जोंक → (जोँक)
- अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है। कभी-कभी इसके गलत प्रयोग से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, जैसे–

  हस
  - हँस (हँसने की क्रिया) अनुनासिक का प्रयोग
  - हंस (एक पक्षी) अनुस्वार का प्रयोग
- सदैव ध्यान रखें कि उच्चारण के आधार पर अनुनासिक 'स्वर' है, जबकि अनुस्वार 'व्यंजन' है। इनके प्रयोग में कहीं-कहीं अर्थ भेद भी दृष्टिगोचर होता है तथा इनके यथास्थान प्रयोग न करने पर भी अर्थ परिवर्तन दिखाई देता है, जैसे–
  - खिड़की **बद** कर दो। [बद–बुरा, बंद–बंद करना]
  - पैर में **काटा** चुभ गया। [काटा–काटना, काँटा–काँटेदार पौधे का नुकीला भाग]

हल सहित प्रश्न

शब्द व पद में अंतर

शब्द

(i) ध्वनियों या वर्णों के मेल से बनने वाली सार्थक एवं स्वतंत्र भाषायी इकाई को 'शब्द' कहते हैं।

(ii) शब्द का अस्तित्व या उसकी सत्ता वाक्य से बाहर है।

(iii) शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है। वाक्य से बाहर होने के कारण यह वाक्य के नियमों से मुक्त होता है।

(iv) शब्द की सत्ता वाक्य से बाहर होती है, अतः प्रकार्य करने का कोई कारण ही नहीं है।

(v) वाक्य से बाहर स्वतंत्र इकाई होने के कारण इसपर व्याकरण के नियमों जैसे–लिंग, वचन, कारक, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

पद

(i) वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही पद कहलाते हैं। पद को ... रूप' भी कहा जाता है।

(ii) पद का अस्तित्व वाक्य में ही संभव है।

(iii) 'पद' भाषा की बद्ध इकाई है। यह भाषा के नियमों ... बँधा होता है।

(iv) वाक्य में प्रयुक्त होने वाला पद (शब्द) कोई-न-कोई ... अवश्य करता है।

(v) भाषा के नियमों से बँधा होने के कारण लिंग, ... कारक, काल आदि से पद प्रभावित होता है।

सीखे जाने वाले बिंदु (LEARNING OUTCOMES)

- शब्द एवं पद से भली भाँति ...